

ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ

ੴ

ਗੁਰੂ ਰਾਮਦਾਸ



ਗੁਰੂ

मुखोक्ते
कोलपत्रसं

कोलारिस्ट्रायोपाथ

四

କୁଟଳା ମନ୍ଦିର ପାଇଁ ମୁଦ୍ରା ।

1994

(A-1) ~~100% (300%)~~

त्रिविद्यालय

~~— गोपी-विष्णु~~

(I-2) ~~ပေါက်များ~~

ନନ୍ଦା ଧୂ

A close-up photograph of a map showing the area around Sanskriti Bhawan. The map includes labels for Sanskriti Bhawan, Sanskriti Bhawan, and Sanskriti Bhawan.

वान प्रति

*Joint Stock Company
Mumbai, India*

ମାତ୍ରାକ୍ରିଯୁମନ୍ଦିପାଠୀପଦମ୍

सुतम्यजुनादमरात्रि

सामाजिक संस्कृति

~~ବନ୍ଦେଶ୍ୱରମାତ୍ରାମହିଳା~~

१-५) विद्युत् विद्युत्

ମୁଖରେ କାହାରେ ପାଦରେ

१० वार्षिक वार्षिक वर्षा।

१०८१४३५२०८

— ପାତ୍ରଜୀବିନୀ ମହାକାବ୍ୟ

~~ବ୍ୟାକରଣମୁଦ୍ରା~~ । ୧୦୩

T-5) ~~ପ୍ରଦୀପ ମହାନ୍ତିର~~

द्वादशिष्ठसीष्ठिरान्वाम्प
उमताम्पिष्ठेत्सप्त्तेष्ठ
वृष्टिष्ठाम्पिष्ठेष्ठिष्ठ
रथुष्ठेष्ठिष्ठेष्ठम्पिष्ठ
रथम्पिष्ठम्पिष्ठ

३ - मध्यमाधुरेश्वरितलाप

~~सामृद्धमात्रिकुली~~

रवीनार्थकुमारुद्धिरि

१३८ असी द्वारा उल्लंघन किया गया

~~४६) उन्मेषद्युम्निज्ञा~~

~~गुरु गोविन्द साही~~

~~—and the in~~

~~३०८ विश्वामित्र~~

Sandal-Dhule and

Rajawade Chavhan

Project of the
Government of
Assam

ପାଦପାତ୍ରକାରୀ

राज्याद्युत्तरालोक

~~ମୁଖ୍ୟମାନାବ୍ୟକ୍ତିରେ~~

~~ବିଜ୍ଞାନ ଉତ୍ସବ~~

କରୁଥିବାକୁ ବିଶ୍ଵାଦ

~~द्वारेभस्तुतवोन्नाम~~

~~वर्णनापीभीयित्यम्~~

~~कृष्ण विजय दिवस~~

~~—~~ དྲୁଣ୍ଡମନ୍ଦିରା

—
—

କରେ ମାତ୍ରିକୁଳନାନ୍ଦନ ପାଇବାରେ

~~ରମ୍ବାନ୍ତକରିପଦମିତିଶ~~

— वृक्षिमास्वीकृतो त्यागमेव

~~देहानि~~

४ वेचाहु नहियत्याम् ॥ द्वयम्
कलापारमित्याम् ॥ द्वयम्

~~स्त्री विवाह उपलब्धि वं धम्~~

दृष्ट्युपदेश द्वयात्

१८५०

କର୍ମପାଦବିଜେତାଧୀନୀ

ਚੇਤਾ ਧਰਿ ਲੁਝਾ ਪ੍ਰਭ ਮੰਨ

~~ये राम पूजे अमरतीर्थ~~

४८ गोपनीय

— དྲୁସୁ ଚାନ୍ଦମାର ପାତା

हेतु यथा मृदुम्

10

ଶ୍ରୀ ମନୁଷ୍ୟାତ୍ମକ ପଦମନାଭ

44-21465-25
200 Chas E. H.
awade Sans

of the Rain
Prairie

कृष्णदेवरामिलामधीन

त्रिपुरासुदूरवार्ष

—**ପ୍ରତିବାଦିକାନ୍ତମାତ୍ରମେ**

श्रीगुरुजेन्द्रियमठीमलाम

ପ୍ରମାଣମନ୍ତ୍ରିଦ୍ୟାଧେହଷ୍ଟୁ

~~द्वितीयांशुप्रकल्प~~

त्रिशूलेन्द्रियरथकुमार

~~पूर्वोक्तमित्रादेवमनुभीतया~~

१० उत्तरायणम् अवतारान् गुरुवा
११ विश्वामित्रं विष्णुं विष्णव

କରୁଣାତ୍ମକାଦେଶ

कृष्णदेवमहात्मीयस्तदा

क्षमाप्रदाता देवता

— କରୁଣାତ୍ମକ ଶିଖପାଦ ହେଲା
— ଶିଖପାଦ ହେଲା କରୁଣାତ୍ମକ

(1-16) तिळ
१८ उल्लेखयोजेवाजीनेप्रमे
चर्हतैल्लेचवस्त्रीप्रती
द्युक्षेन्द्रियाज्ञानम्
यांनीचुण्डेश्वरीउडीनीवे
बिलाप्पास्येत्प्रार्थिके

~~नहोद्दी धेतु महरिपन्नाही
उमड्हे वेलीवे चांगोली
दृक्कलवेशाद्येद्दीपत्ती
कामरवाई~~

(1-18) ११ चादूमेप्रयंगिष्ठनरामपत्ति
 पशुपावलवालेलमुनी
 रेप्रभुद्योधावभवत्तु
 रामे महाम
 १२ रामेहरुएदेवताजिम
 १३ रामेहरुएदेवताजिम

गरुदार्थाद्यवाम्बन्धवाद्यता
पूर्वीत्येति अस्मिन्नाम
कौठमज्जिते गरुदामसीवाय

१८४५ ई० पृ० ३८

— एनेन्त्याचेद्याप्यर्थात्

ଶାନ୍ତି ପରିଦେଶକୁ ପରିମଳା

त्रिविद्यालय

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣପଦବୀନାମି

~~मात्रिकादेवता~~

—~~छेष्टनपाठके उद्घाटनम्~~

~~চৈত্যাবস্থানাম~~

पात्रकृत्यादिष्ठेनिवास

ବାନ୍ଦାଳୁ ପ୍ରକାଶ

~~କାନ୍ତିକା-ବିଜ୍ଞାନ-ପରିଚୟ~~

२।) द्युमिती द्युमिती द्युमिती

क्षमता द्वारा सुनिश्चित रूप से मुक्ति

~~सर्वादिप्राप्तिसंग्रहार्थी~~

“Join the numbers.”

ମୁଦ୍ରାକଣ୍ଠପତ୍ରଶବ୍ଦି

ଦେଖିପାରିବା ହେଲା କିମ୍ବା

४५८४६०५१५४०

ନୃତ୍ୟାଳୀକାରୀ ୧୯୮୦

ନେତ୍ରକାଳିମାରୀ

३८४

ବ୍ୟାକେନ୍ଦ୍ରପୁଣ୍ୟ

ମୁଦ୍ରିତ-ରାମାକଣ୍ଠ

ପୁରୀତଥିଲେ କାହାରେ ଦୂରାତନି

४८५ अनुवाद

~~सहायता द्वितीय पाठ्य~~
~~दानां देहस्य अधिकारावै~~
~~वै चाद्यं पृष्ठं श्रवणं द्वै~~

स्त्रीलोकानुषिद्धिपत्र

ଗ୍ରାମବିନ୍ଦୁକୁଳୀଜାମାନ

— श्रीरामचन्द्रसंग्रहालय

~~— एवं प्राचीन लम्बाद्याम्~~

~~तद्विद्यामुहेभवत्तद्विद्यामुह~~

२४ श्रीपद्मालयमंडपम्

—**ତାମାହାନ୍ତିକାର୍ଯ୍ୟ**—**ପଦମଗାନ**

~~करनेमें भद्रा गंधर्वा हमी~~

... 8)

१२ देवान्तरम् अनुभविते विजयं

१८५० विनायक चतुर्दशी व्रत
नवरात्रि व्रत विवरण
प्रस्तुत किए गए हैं।

ନୀତିମୁଦ୍ରା ପରିଷଦ

~~एवं चारू अस्मि कर्त्ता इति~~

~~THUR~~ ~~SUN~~

୧୬—ମେଘିନ୍ଦ୍ରାଜୁହିନ୍ଦୁପରେମୀନେତ୍ର

(1-26) ହର୍ଷାଜୀପଟ୍ଟକଳା

दात्तरेणिष्वद्यते

धूर्दोहिनमज्जनार्थीतपठेति

महान्वत्यन्तराम्

देवोपरिषद्युपाणीम्

~~ମହିତାମିଶ୍ର~~ ମଳୀ

卷之三

१ । वनामुखम् अद्य होहसा प्रचयम्

— उलित् श्वरा धर्म देवी मंडीला

— चमुषी न लेका कलीया दुप

— द्वय स दील जैसव द्विरा तो द

(1-28) — गात्र बंग लघी ताप्ति तित्पर

— इंद्री देवी न दूर ये दृष्टिया

— दृष्टि लां भ्रं बंग लग्न दुर्द

— दात्य लाली भ्रं बंग देवी न ही

— एक्षु उमल देवी न ताल

— यं लं दृता वे जूँ भूमि बूँ

(1-29) — देवी त्याल न देवी द्विरा च

— देवी वाहौ तुष्टि चासा

— दूरी ता लम्बी दृती लाला

2 । दूरी ता लम्बी दृती लाला

— दूरी ता लम्बी दृती लाला

— दूरी ता लम्बी दृती लाला

(1-30) — दूरी ता लम्बी दृती लाला

(1-31) — दूरी ता लम्बी दृती लाला

मोहनामुखप्रवाप

ବୋଲିନି ଉତ୍ତମାଦ୍ଯମ୍ଭାବ

— १८ —

त्रिविक्रमी

०४०८७१३२०८५६८०

—

३८५
द्विलक्षणं द्विलक्षणं

ଶାରୀରିକେ ନିର୍ମିତ ପାହାନ୍ତର

~~କୁତୁହାର ପିଲାମାନ ପାତ୍ର~~

ନମୋଦିତିପାଇଁମେହିମ

४० अप्रैल १९८५

१८५० अक्टूबर को राजा लक्ष्मण ने अपनी पत्नी को बेटे के साथ विवाह करवाया।

३५० विष्णु एवं लक्ष्मी

३५८

१० दीप्तिमुखी शिवा

१९८३ अगस्त

~~21-1833~~

卷之三

三月廿二日

ପ୍ରକାଶନ ମହିନା

ପାଦବୀ କରିବାକୁ ଅନ୍ତରେ ଏହାରେ ମଧ୍ୟରେ
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

—
—

१८७९६९ दृष्टिरूप

ସମ୍ମର୍ତ୍ତମାନମର୍ତ୍ତମାନ

ମନ୍ଦିରକାଳୀ

त्वरोपवाचूक्तिना

-द्युम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

द्युम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

न्दीद्युम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

(1-36)

ल्लाम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

-क्षुभिन्दीद्युम्भिन्दी

स्त्रेन्दीद्युम्भिन्दी

र्वन्दीद्युम्भिन्दी

क्षोम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

-न्देन्दीद्युम्भिन्दी

प्रस्त्रार्थितात्प्रस्त्रार्थितात्

(1-37)

नात्यस्त्रहीतावेपावीता

-ल्लाम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

इति

न्देन्दीद्युम्भिन्दी

चार्हम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

प्रिन्दीद्युम्भिन्दी

र्वाम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

त्प्राम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

वाम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

र्ववोयंद्युम्भिन्दी

-छुम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

द्युम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

न्देन्दीद्युम्भिन्दी

गंद्येयंद्युम्भिन्दी

द्युम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

ज्ञमतीद्युम्भिन्दी

(1-38)

द्युम्भिन्दीद्युम्भिन्दी

ज्ञमतीद्युम्भिन्दी

ज्ञमतीद्युम्भिन्दी

(1-40)

ततिक्षेपृष्ठान्वयता
कल्पनात्प्रगाम
नक्षीयसहित्प्राप्ते
क्षितियोग्यमेहेत्यै
अर्थायसंदीताभवित
चिक्षां द्विग्रामद्विग्राम
वस्त्राल्पेष्टुपुष्टाम

(1-41)

रामजित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति

(1-42)

नन्यन्वाप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति

(1-43)

द्विक्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति
क्षित्प्राप्तिक्षित्प्राप्ति

(1-55) - उष्णवाते न पैत्रामुहृष्ट
दुर्विकल्प करिष्यते च
वेदन राग्यो चाग्नित
इष्टो तुम्हवा धन्ति विष्ट
गेवाते द्विष्ट मन्त्रिक
उपवास ते भवते अप्त्वा
ज्ञवाते तुम्हाय ज्ञव

(1-55) ६ - पाठी विश्वासे कर्मणाम्
त्यागो विभवत्ता विजयि
द्विष्ट ते पाठी धृति
पाठी विभवत्ता विजयि

- उगंवाद्विष्ट विजयि
स्मिव तु विवाय न वागांवा
द्विष्ट विभवत्ता विजयि

(1-56) ७ - द्विष्ट पाठी विभवत्ता विजयि
प्राप्तो मी तु वामामे न ला
त्पाती विभवत्ता विजयि

- द्विष्ट पाठी विभवत्ता विजयि
प्राप्तो मी तु वामामे न ला
त्पाती विभवत्ता विजयि

- द्विष्ट पाठी विभवत्ता विजयि
प्राप्तो मी तु वामामे न ला
त्पाती विभवत्ता विजयि

- द्विष्ट पाठी विभवत्ता विजयि
प्राप्तो मी तु वामामे न ला
त्पाती विभवत्ता विजयि

(1-57) ८ - द्विष्ट विभवत्ता विजयि
मुख्यान्वाद्विष्ट विभवत्ता विजयि
तोप्तिविभवत्ता विजयि

- न अयोग्य स विभवत्ता विजयि
जपाते विभवत्ता विजयि

- द्विष्ट विभवत्ता विजयि
चलामुहृष्ट विभवत्ता विजयि

- चुक्ष्माद्विष्ट विभवत्ता विजयि

- इच्छाद्विष्ट विभवत्ता विजयि

(1-58) ९ - इच्छाद्विष्ट विभवत्ता विजयि

ताद्यतदृच्छनिधाना

उत्तरेष्यजस्मिन्नांश्चेष्ट

साज्जद्वाताम्नाप्तेष्ठो

चयुगेष्यनातवीर्तिपर

उराप्तमेष्यान्नद्वाव

त्पत्तेष्यजस्मिन्नाप्तेष्ठ

उपाप्तमेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

चयुगुणपृष्ठेष्यप्राप्तेष्ठ

क्षमागीभद्रापृष्ठेष्ठ

हत्याक्षेष्ठोवेष्ठेष्ठो

उराप्तमेष्यान्वागेष्ठो

सप्तपृष्ठेष्यर्थेष्ठो

वार्षिक्षिराधमेष्ठो

उधीर्दृष्टिसंपर्केष्ठो

दृष्टिसंपर्केष्ठो

उपाप्तमेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

वृक्षेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

अर्थात्तेष्यप्राप्तेष्ठ

कृष्णमेष्ठोपोष्ठरित्वा

वर्तुष्यत्पात्पर्यन्तेष्ठ

उपाप्तमेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

(1-52) उपाप्तमेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

माप्तमेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

नाद्यतीत्यमेष्यमहंप्राप्तेष्ठ

रामभृष्टेनमेवुनची

४ श्रीमद्भागवतम्

सुन्दरी

~~कुमारद्युम्नजनपदम्~~

ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀ

१८५३-४०२५

यमादिवामनाक्षेत्रम्

~~स्वेच्छाविद्यालयसंघिए~~

क्षमताप्रदाता विद्युत्प्रदाता

दृष्टिनेत्रवस्त्रायां च मारा

सुष्ठुप्रमाणान्तर्वद्युपेष्ठ

~~ପ୍ରଦୀପ ପାତ୍ର ମନ୍ଦିର~~

~~महाराष्ट्र विधान सभा~~

*the Raja
an Pra
the*

~~निर्माण नियम~~

~~२५४ द्वारा प्रभु लक्ष्मी विजया प्रतिष्ठानम्~~

~~ବେଳାପିଲମଦିଲାଗା~~

— श्री विष्णु विजय विनायक

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

~~द्वारा इस प्रकार देखा जाएगा।~~

~~दीदाप्रसादिवृप्तासान्~~

~~राजशंकरहास्यमाल~~

द्युमिंगांवाहनोचारी

—त्रिविज्ञानप्रधारणारसंही

Page 18

4-57

गांवृत्तिष्ठपात्रेतेवक्तु
कवर्णत्यस्मिन्देवोगम
दिश्मोऽन्तर्गतं लोक्यामयम्
दिश्मास्तेष्टुपात्रपोठच्छ
दासं इति लभते विश्वामी
कल्पदीवामा द्विजस्ताप
नक्षत्रेष्टुपात्रपोठज्ञ

रामायणम् विजयं रामायणम्
उत्तमायणम् विजयं रामायणम्
सुनीलगंगा विजयं रामायणम्
ज्ञानायणम् विजयं रामायणम्
लक्ष्मीविजयं रामायणम्
प्रभाविजयं रामायणम्
साक्षीविजयं रामायणम्

100

Digitized by srujanika@gmail.com

三

पार्वती देवी का एक शब्द
देखना उन्हें दूर था यहाँ
उन्होंने बहुत अधिक लिखा
एक अमानवीय शब्द हो गया
कहा तब उन्होंने दूर दूर
देखा देवी का एक शब्द
जो दूर दूर दूर दूर दूर
दूर दूर दूर दूर दूर



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com